# हिंदी की स्वायत्तता व अस्मिता बचाने में बुंदेलखंडी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान

अमर उजाला ब्यूरो

मुक्त विवि में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में उपस्थित अतिथि। स्रोत : संवाद

## वक्ताओं ने हिंदी के विकास में क्षेत्रीय भाषाओं के योगदान पर की चर्चा

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिनी सेमिनार के समापन सत्र में मुख्य अतिथि बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मुन्ना तिवारी ने कहा कि हिंदी की स्वायत्तता, स्वतंत्रता एवं अस्मिता बचाने में बुंदेलखंडी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रोफेसर तिवारी ने कहा कि बुंदेली साहित्य जोश और ऊर्जा प्रदान करता है। इसी वजह से यह क्षेत्र कभी गुलाम नहीं रहा। इसमें युद्ध एवं विचारोत्तेजक कविताओं का वर्णन मिलता है। हिंदी की स्वायत्तता एवं स्वतंत्रता के लिए इन उपभाषाओं ने काफी संघर्ष किया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि हिंदी मुख्यतः बोलियों का समुच्चय है। हर भाषा की अपनी पहचान एवं अस्मिता होती है। उनका संरक्षण किया जाना चाहिए। अवधी, भोजपुरी के साथ ही मैथिली, अंगिका, मगही आदि भाषाओं को पढ़ने से हम अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

साहित्य अकादमी के प्रतिनिधि अजय शर्मा ने कहा कि हिंदी को समाज एवं साहित्य में उत्कृष्ट स्थान दिलाने के लिए क्षेत्रीय बोलियों भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के विभिन्न सत्रों में हुए व्याख्यानों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

इस अवसर पर उन्होंने साहित्य अकादमी की अवधी एवं भोजपुरी पर प्रकाशित कृति कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम को भेंट की।

प्रोफेसर रामपाल गंगवार ने कहा कि सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने की क्षमता ब्रजभाषा में समाहित है। ब्रज भाषा में कोमलता के साथ-साथ श्रृंगार और वात्सल्य से प्रेरित कविताओं की लंबी श्रृंखला है। जिसने हिंदी के विकास में चार चांद लगाए।

इससे पहले डॉ आनंदानंद त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत किया। सेमिनार की रिपोर्ट अनुपम ने प्रस्तुत की। डॉ.त्रिविक्रम तिवारी ने संचालन तथा प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।